परिशिष्ट

कु. सुवर्णा सिद्धू गावडे
शोध-छात्रा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

परिशिष्ट - 1

प्रश्नावली

1. 'हस्तक्षेप' उपन्यास लिखने के पीछे आपका मूल उद्देश्य क्या है ?
2. 'हस्तक्षेप' उपन्यास की नायिका यदि आदिवासी महिला होती तो उपन्यास को देखने का नजरिया ही बदल जाता। फिर आपने ऐसा क्यों नहीं किया ?
3. सिर्फ अपने 'उरॉव जाति' का उल्लेख किया है ? उनके रीतिरिवाज, संस्कार, विवाह, पर्व-त्यौहार आदि के संबंध में कुछ भी नहीं बताया। ऐसा करने के पिछे क्या प्रतिपाद्य है?
4. क्या आपने आदिवासियों का सूक्ष्मता से अध्ययन किया है ? उनके बारे में आपके क्या विचार है ?
5. सद्यस्थितियों में नारी-विमर्श, स्त्री-अस्मिता के बारे में आपके क्या विचार हैं ?
6. क्या आदिवासियों के विकास के लिए बुद्धिजीवियों की विदेश यात्रा आवश्यक है ? यश और धन कमाने से आदिवासियों का विकास हो सकता है क्या ?
7. 'हस्तक्षेप' में आदिवासियों का महानगरीय जीवन आपने चित्रित किया है ? क्या वहाँ कोई ऐसा महानगर है ?
8. आदिवासियों का विस्थापन रोकने के लिए आप क्या सुझाव बतायेंगे ?
9. वर्तमान शिक्षा व्यवस्था को बदलने के लिए उसके मूल्यों का जतन करने के लिए किस तरह की शिक्षाप्रणाली का होना आवश्यक है ?
10. 'गंदी' राजनीति को जड़ से उखाड़ने के लिए क्या करना चाहिए ?
11. 'कानून अंधा है' यह बात कहाँ तक सार्थक है ?
12. आज भूमंडलीकरण के जमाने में आदिवासियों का विकास हो सकता है क्या ? उसके लिए सुझाव बताइए ?

13. आँचलिकता, नारी चेतना, दलित चेतना जैसे प्रवाह की तरह 'आदिवासी चेतना' हिंदी साहित्य में क्यों नहीं दिखाई देती ?
14. कानूनी कार्यवाही के बीच अश्लील, मानसिक एवं शारीरिक पीड़ादायक स्थिति का सामना 'स्त्री' को ही क्यों करना पड़ता है ? इससे आप क्या दर्शाना चाहते हैं ?
15. आपको किन-किन रचनाओं को पुरस्कार मिले हैं ? (पुरस्कार के नाम)
16. वर्तमान में आप क्या लिखे रहे हैं और किस विषय पर ?

कुमारी सुवर्णा सिंधू गावडे, शोध छात्रा, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर
द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर

□□□

१. मेरी दृष्टि में " हस्तक्षेप " के अध्ययन के पश्चात् भी यदि पाठक के सामने इसका उद्देश्य स्पष्ट न हो सका हो , तो इसके उद्देश्य के सम्बंध में लेखक को अपनी ओर से कुछ नहीं बोलना चाहिए। उसे चुप ही रहना चाहिए।

२." हस्तक्षेप " के लिए जैसी नायिका की आवश्यकता थी, वैसी ही नायिका का इसमें चित्रण है। यदि इसकी नायिका आदिवासी होती तो वह शायद महुआ जैसी जुझारु नहीं हो पाती।

३." हस्तक्षेप " एक उपन्यास है। यह मानव विज्ञान का ग्रंथ नहीं है, जिसमें सभी आदिवासी जातियों के बारे में सब कुछ बताया जाता।

४. मैं आदिवासी बहुल क्षेत्र का ही निवासी हूँ। उनके जीवन को मैंने बहुत समीप से देखा है। आदिवासी मूलतः बड़े सरल तथा परिश्रमी होते हैं। पर शहरी, शिक्षा तथा धर्मान्तरण के प्रभाव ने उन्हें आज का " चालाक " आदमी बना दिया है।

५. नारी तथा उसकी अस्मिता पर उचित विमर्श की आवश्यकता से कोई भी प्रबुद्ध व्यक्ति इनकार नहीं कर सकता। लेकिन यह देखने में आ रहा है कि इस क्षेत्र में भी कुछ अतिवादी घुसपैठिए शामिल हो गये हैं। इनमें महिलाओं की भी सहभागिता है।

६. आदिवासियों के विकास के लिए बुद्धिजीवियों को विदेश-यात्रा बिलकुल आवश्यक नहीं है। यश और धन कमाने से चंद लोगों का विकास तो हो सकता है, परंतु पूरे समाज का नहीं ।

७. " हस्तक्षेप " में किसी महानगरीय जीवन का चित्रण नहीं है। जिन नगरों का यहाँ उल्लेख है, वे महानगर बनने की दिशा में अग्रसर जरुर हैं।

८. आदिवासियों को जब तक अपने ही क्षेत्र में रोजगार के अवसर उपलब्ध नहीं करवाये जायेंगे, उनके विस्थापन तथा पलायन को नहीं रोका जा सकता।

९. पूरी दुनिया की शिक्षा-प्रणाली मातृभाषा पर आधारित है। केवल ब्रिटिश शासित उपनिवेशों में यह बात देखने को नहीं मिलती। भारत इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। परिणाम यह है कि हम अँगरेजों से तो मुक्त हो गये, मगर अँगरेजी के गुलाम हो गये। जब तक यह शिक्षा-प्रणाली जारी रहेगी

[२]

भारत को वास्तविक स्वतंत्रता कभी नहीं मिल सकेगी।

१०. जनता को सही ढंग से शिक्षित तथा विवेकी बनाये बगैर गंदी राजनीति को जड़ से उखाड़ना सम्भव नहीं।

११. कानून अंधा होता है, यह एक सार्वभौम सत्य है। इसे जो दिखाया जाता है, यह वही देखता है। इसके पास न विवेक होता है और न आत्मा।

१२. आदिवासियों का विकास हर व्यवस्था में सम्भव है। इसके लिए केवल ईमानदार प्रयास की आवश्यकता है।

१३. अब साहित्य में "आदिवासी चेतना" भी धीरे-धीरे अपनी जगह बना रही है।

१४. कानूनी कार्यवाही में नारी को किस प्रकार मानसिक रूप से पीड़ित किया जाता है। इसका चित्रण कर मैंने कानूनी प्रक्रिया की अमानुषिकता की ओर समाज का ध्यान आकृष्ट किया है।

१५. मुझे निम्नलिखित पुरस्कार मिले हैं-

[१] राधाकृष्ण पुरस्कार - जंगलतंत्रम् उपन्यास के लिए।

[२] प्रेमचंद अनुशंसा पुरस्कार - राहु केतु उपन्यास के लिए।

[३] कथा-लेखन के लिए बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् का पुरस्कार।

[४] मानस संगम पुरस्कार रामचरितमानस [मुण्डारी] के सम्पादन के लिए।

१६. पिछले तीन वर्षों से मेरा लेखन बाधित है।

श्रवणकुमार गोस्वामी
८.२.२००८

[श्रवणकुमार गोस्वामी]

... LIBRARY
...APUR

श्रवणकुमार गोस्वामी
सदस्य ,हिन्दी सलाहकार समिति, गृह मंत्रालय, भारत सरकार,, नयी दिल्ली–1

आश्रय , नयी नगड़ा टोली , चौथी गली (पूरब), राँची–834 001 () दूरभाष – 0651 – 2562960

११ जनवरी २००७

आयुष्मती सुवर्णा,

आपका पत्र दिनांकित १-१-२००७ मिला । यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप मेरे उपन्यास " हस्तक्षेप " पर एम.फिल् के लिए शोध-कार्य कर रही हैं। इस कार्य में आपको कोई असुविधा नहीं होनी चाहिए ; क्योंकि आपके शोध-निर्देशक डॉ. सुनील ने मेरे उपन्यासों को केन्द्र में रखकर ही पीएच.डी. के लिए अपना शोधप्रबंध प्रस्तुत किया था। अब वह उपन्यास के विशेषज्ञ माने जायेंगे।

पत्र के साथ मैं " हस्तक्षेप " के सम्बंध में प्रकाशित चार समीक्षाओं की छाया प्रति भेज रहा हूँ। इनसे आपका कार्य सिद्ध हो जायेगा।

जिस दिन आपका पत्र मिला ,उस दिन मैं बिस्तर पर था। बायें पैर पर प्लास्टर चढ़ा हुआ था। प्लास्टर खुलने के बाद ही यह पत्र भेजना सम्भव हो सका है ।

डॉ .सुनील जी का इधर कोई समाचार नहीं मिल सका है। वह अपना शोधप्रबंध प्रकाशित करवानेवाले थे। क्या हुआ ? मिलने पर उनसे मेरा नमस्कार कहें।

जब आप अपना लघु शोधप्रबंध प्रस्तुत करें तो उसकी एक प्रति मेरे पास अवश्य भेजने की कृपा करें।

शु भे गो

कुमारी सुवर्णा गावडे, कोल्हापुर
पुनश्च – प्राप्ति-सूचना अवश्य भेजें

श्रवणकुमार गोस्वामी
सदस्य, हिन्दी सलाहकार समिति, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नयी दिल्ली-1
आश्रय, नयी नगड़ा टोली, नयी गली (पूरब), रांची-834 001 () दूरभाष - 0651 - 2562960

१७ जनवरी २००८

आयुष्मती सुवर्णा,

तुम्हारा पत्र मिला। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि ३१ जनवरी को तुम अपना लघु शोधप्रबंध जमा करने जा रही हो। समय बहुत कम है और पारिवारिक उलझनों में मैं कुछ ऐसा फँसा हुआ हूँ कि तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर शीघ्र भेजना सम्भव नहीं लगता। यदि मैं २४-२५ तक उत्तर भेजूँगा तो वह समय पर तुम्हें नहीं मिल पायेगा और तुम्हारा काम अटक जायेगा। यदि लघु शोधप्रबंध जमा करने के लिए तुम्हें दो सप्ताह का समय मिल सके तो फोन से सूचित कर देना। मैं प्रश्नावली के उत्तर भेजने का प्रयास करूँगा।

अभी मेरे पास छोटा फोटो ही उपलब्ध है। इसे मैं भेज रहा हूँ। पत्र मिलने पर फोन पर सूचना दे देना।

आशा है, तुम स्वस्थ तथा प्रसन्न हो।

शुभैषी

श्र. गोस्वामी

कुमारी सुवर्णा
कोल्हापुर

891.433
GAV
T15488